उपसंहार

उपसंहार

हिंदी साहित्य की उपन्यास विधा के अंतर्गत अनेक शाखाएँ विकसित हुअी है। `मनोविज्ञान` भी उसी की एक शाखा है। इस मनोविज्ञान की धारा को दूर तक ले जाने में `अज्ञेय` जी की भूमिका अहम रही है। अज्ञेय जी अपने व्यक्तिवादी लेखन के कारण हमेशा विवाद का विषय रहे हैं। ऐसे ही विवादास्पद रचनाकार की रचनाओं के प्रमुख पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन मैंने प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में करने का प्रयास किया है। कुल लघु-शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत अज्ञेय जी के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व की चर्चा की है। अज्ञेय जी का जन्म एक सारस्वत पंजाबी ब्राह्मण परिवार में, गोरखपुर के पास देवरिया जिले के कसिया नामक ग्राम में 7, मार्च 1911 ई. में हुआ। पिता की नौकरी के कारण उन्हें बचपन में ही अनेक स्थानों पर घुमने का अवसर प्राप्त हुआ। अज्ञेय जी की प्रारंभिक शिक्षा घरपर ही हुई। आरंभ से ही अज्ञेय जी विद्रोही प्रवृत्ति के थे, वे किसी भी नियमों में अपने को बँधना नहीं चाहते थे। इसी कारण उन्होंने अनेक जगहों पर नौकरी की और छोड भी दी। शिक्षा-दीक्षा, नौकरी के साथ-साथ इन्होंने कुछ मात्रा में घर-गृहस्थी में भी दखलंदाजी की है। उनका वैवाहिक जीवन कुछ खास नहीं रहा। अज्ञेय जी के जीवन में अनेक मोड आए हैं। घुमक्कड प्रवृत्ति के अज्ञेय जी कभी क्रांतिकारक, कभी कैदी तो कभी संपादक रहे हैं, जिसमें उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है तथा स्वयं को दाव पर लगाना पड़ा है। बहुमुखी प्रतिभा के धनि अज्ञेय जी ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपनी छाप छोड़ी है। उन्होंने अपने अनुभव तथा जीवन को ही लेखन के विषय बनाएं हैं। अज्ञेय जी के व्यक्तिगत जीवन का काफी प्रभाव उनकी रचनाओं पर दिखायी देता है। उसका `शेखर` पढते समय तो वह शेखर है या स्वयं `अज्ञेय` जी कुछ पता ही नहीं चलता। कल्पना के पंख लगाकर ऊँचे आकाश में उड़ने की बजाय मन में उठे हर विचार, द्वंद्व और उलझन को मनोवैज्ञानिक पद्धति से पाठक के सामने रखने का सफल प्रयास अज्ञेय जी ने किया है। इसी कारण उन्हें कई मान-सम्मानों से पुरस्कृत किया गया है।

द्वितीय अध्याय `मनोविज्ञान स्वरूपगत विवेचन` में मैंने विभिन्न परिभाषाओं से लेकर उसके स्वरूप, विकास तथा विभिन्न प्रकारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। भारतीय एवं पाश्चात्य

विद्वानों की परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात संक्षेप में मनोविज्ञान की परिभाषा इसप्रकार की है - ``मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें मानव-मन तथा उसके कार्यों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से सर्वांगीन व्याख्या की जाती है।``

पहले- पहले मनोविज्ञान का रूप दार्शनिक ही था, उसपर वैज्ञानिक दृष्टि से कोई विचार नहीं हुआ था। लेकिन सोलहवी- सत्रहवी शताब्दी के बाद अनेक मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को आधुनिक दृष्टिकोन से स्थापित किया है, जिसमें मनुष्य और उनका व्यवहार, उनकी बुद्धी, आत्मा, चेतना, संवेदना तथा विचार इन सभी बातों को समाविष्ट कर दिया है। आज मनोविज्ञान काफी विकसित रूप धारण करके सामने आया है। जिसके तहत मनोविज्ञान को अनेक शाखाओं में विभाजित किया गया है। जैसे कि - `सैद्धांतिक मनोविज्ञान, व्यावहारिक मनोविज्ञान आदि। मनोविज्ञान के विकास में अनेक मनोवैज्ञानिकोंने अपना योगदान दिया है। फिर भी उनमें फ्रायड, एडलर, युंग आदि मनोवैज्ञानिक प्रमुख हैं। उन्होंने मनोविज्ञान की अनेक पद्धतियों का निर्माण किया है। इन सभी में आपसी मत-मतांतर अवश्य रहे हैं, लेकिन सभी का एक प्रमुख उद्देश्य रहा है -व्यक्ति मन का अभ्यास।

वर्तमान परिस्थिति में विषमताओं से युक्त जीवन में मानसिक विकारों का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान का ही सहारा लिया जाता है। मनोविश्लेषण मानसिक चिकित्सा क्षेत्र में पर्याप्त सुधार हुए हैं। अब मनोविज्ञान का क्षेत्र असामान्य व्यवहार तथा स्नायुरोगों की चिकित्सा से भी आगे बढकर गेस्टाल्टवाद के रूप में व्यक्ति की समग्रता को पहचानने तक विस्तृत बन गया है। इस दृष्टि से देखा जाय तो मनोविज्ञान का महत्त्व निर्विवाद सिद्ध होता है। मानसिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति का सर्वांगिण विकास करना ही आधुनिक मनोविज्ञान का प्रमुख लक्ष्य है। मनोविज्ञान की उपयोगिता देखी जाय तो मानव शिक्षा एवं सुधार तथा चिकित्सा और रोग परिहार के साथ-साथ व्यवसाय तथा व्यवहार में भी यह उपयोगी सिद्ध होता है। मनोविज्ञान की पहुँच व्यक्तिमन से शुरू होकर अब पशु मन तक भी पहुँच चुकी है। अत: मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान है, जो मानव की चेतनावृत्ति के कार्य करने की प्रवृत्ति की व्याख्या करता है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत मैंने अज्ञेय जी के उपन्यासों का सामान्य परिचय दिया है।

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी से उपन्यास का सही प्रारंभ माना जाता है। उनसे पूर्व चली आये रहस्यरोमांच के उपन्यास से निकालकर उपन्यास को प्रेमचंदजी ने समाज की वास्तविकता के धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया। आगे उपन्यास विषा समाज जीवन के साथ-साथ व्यक्तिमनं पर केंद्रित हुई, जिसके परिणामस्वरूप `मनोवैज्ञानिक` धारा प्रवाहित हुई। इस मनोविज्ञान की धारा को प्रौढ रूप देने का सही कार्य अज्ञेय जी ने किया है। अज्ञेय जी के तीनों उपन्यास `शेखर : एक जीवनी`, `नदी के द्वीप` और `अपने-अपने अजनबी` मनोवैज्ञानिक उपन्यास हैं। कल्पना की उडान, तथा देश, काल वातावरण आदि बातों को अज्ञेय जी ने अपने उपन्यासों में विशेष स्थान नहीं दिया है। व्यक्तिमन की उलझन तथा द्वंद्व स्पष्ट करना ही उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है।

`शेखर : एक जीवनी` अज्ञेय जी का दो बृहत भागों में विभाजित उपन्यास है। इस उपन्यास के सहारे ही अज्ञेय जी ने हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रवेश किया था। `शेखर : एक जीवनी` शेखर की बचपन से लेकर युवावस्था तक की घटनाओं और उसके बौद्धिक संघर्ष की कथा है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु बहुत ही विशाल किन्तु बिखरी पड़ी है। जिसमें सुसंबद्धता का अभाव है। शेखर के बाल-स्वभाव को मनोवैज्ञानिक और यथार्थ चित्रण हिंदी साहित्य के लिए एक नयी देन है। कथावस्तु चाहे जैसी भी हो अज्ञेय जी की उसपर मजबुत पकड़ और कलम से बह निकलनेवाला जीवंत और सटीक चित्रण देखकर पाठक अचंबित रह जाता है। पात्रों के अंतर्मन में उमडनेवाला द्वंद्व का तुफान पाठकों के मन में अपने रंग जमाने लगता है।

पात्रों की दृष्टि से `शेखर : एक जीवनी` में दो ही प्रमुख पात्र हैं-शेखर और शशि। शेखर एक जिज्ञासु, कुंठित और विद्रोही व्यक्तित्व है। शेखर में सभी अच्छे बूरे गुणों का समन्वय हो गया है। दूसरा प्रमुख पात्र शशि, जो पूर्णत: शेखर के प्रति समर्पित है। शशि शेखर की प्रेरणा है। वह शेखर के लिए अनेक शारीरिक और मानसिक यातनाओं को सहती है। कथोपकथन का पर्याप्त प्रयोग प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है। उपर्युक्त सभी बातों को देखकर कहना उचित ही होगा कि विद्रोही शेखर को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करने में अज्ञेय जी का `शेखर : एक जीवनी` पूर्णत: सफल उपन्यास है।

`नदी के द्वीप` अज्ञेय जी का द्वितीय उपन्यास है। यह एक प्रणय की अत्यंत सुकुमार

कथा है। इस कथावस्तु में सामाजिकता का पूर्णत: अभाव ही दिखायी देता है। पात्रों के मनोविश्लेषण को महत्त्वपूर्ण मानकर अत्यंत नगण्य कथावस्तु के सहारे 415 पृष्ठों का बृहत उपन्यास लिखना प्रतिभासंपन्न लेखक का ही काम हो सकता है। `नदी के द्वीप` मनोवैज्ञानिक चरित्र-प्रधान उपन्यास है। इसमें प्रमुख चार पात्र भुवन, रेखा, गौरा और चंद्रमाधव हैं। सभी पात्र शिक्षित, संवेदनशील एवं विचारक हैं। संवाद और भाषाशैली की दृष्टि से यह बहुत ही सफल रचना है। देश, काल वातावरण की दृष्टि से `नदी के द्वीप` पूर्णत: असफल रचना रही है। व्यक्तिगत चेतना प्रस्तुत करना ही लेखक का प्रमुख उद्देश्य रहा है, जिसमें अज्ञेय जी बहुत ही सफल हुए हैं।

`अपने-अपने अजनबी` अज्ञेय जी के अंतिम और लघु-उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में अज्ञेय जी अपने पाठकों को मृत्यु का साक्षात्कार कराने के लिए बंद काठघर में ले जाते हैं। सेल्मा और योके इन प्रमुख दो पात्रों के द्वारा ही पाश्चात्य और पौर्वात्य संस्कृति को उन्होंने हमारे सम्मुख रखा है। `अपने-अपने अजनबी` का प्रत्येक पात्र प्रतीकात्मक है और हर पात्र जीवन के लिए झगड़ता हुआ दिखायी देता है। संवादों में दार्शनिकता का ही पुट विद्यमान है। देश, काल, वातावरण की दृष्टि से `अपने-अपने अजनबी` में भी अज्ञेय जी को पूर्णत: असफलता मिली है।

प्रस्तुत तीनों उपन्यासों का विवेचन विश्लेषण करने के पश्चात निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि कथानक की दृष्टि से अज्ञेय जी की तीनों उपन्यासों में काफी सफलता प्राप्त हुई है। बहुत ही सीमित कथावस्तु के माध्यम से विस्तृत उपन्यासों का निर्माण अज्ञेय जी ने किया है। उपन्यासों के सभी पात्र मनोवैज्ञानिक हैं तथा सभी पात्र शिक्षित भी हैं। संवादों में भी मार्मिकता रही है। लेकिन देश, काल, वातावरण की दृष्टि से बहुत कुछ असफल रहे हैं।

चतुर्थ अध्याय में तीनों उपन्यासों के प्रमुख पुरूष पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। तीनों उपन्यासों में मिलकर सिर्फ तीन ही प्रमुख पुरूष पात्र हैं -शेखर, भुवन और चंद्रमाधव। शेखर `शेखर : एक जीवनी` का नायक है। शेखर में सभी अच्छे-बुरे गुण विद्यमान हैं। बचपन से ही जिज्ञासू शेखर के मनपर प्रत्येक घटना दृष्य गहरा परिणाम करता है। जिज्ञासावश वह हर घटना या दृश्य के बारे में जानने की कोशिश करता है लेकिन कोई भी उसे सही जानकारी नहीं देता। इसी कारण वह

कुंठित बनता है। उसकी यह कुंठा दिन-ब-दिन बढ़ती ही जाती है। इसी के परिणामस्वरूप वह अहंवादी, विद्रोही तथा कुंठित बनता है। वह जीवन से कटा हुआ दिखायी देता है। वह हमेशा भटकता रहता है, किसी भी जगह पर स्थिर नहीं रहता। वह कभी क्रांतिकारी, कभी कैदी तो कभी साहित्यकार बनता है। केवल शशि ही उसके जीवन की नैया को सही दिशा की ओर मोड लेती है। इस प्रकार शेखर पूरे उपन्यास में एक मनोवैज्ञानिक रोगी ही दिखायी देता है।

भुवन `नदी के द्वीप` का नायक है। मितभाषी भुवन अपने अच्छे स्वभाव के कारण सभी की सहानुभूति का पात्र बन जाता है। कुशलबुद्धि भुवन की छोटी शिष्या गौरा जब जवानी की दहलिजपर कदम रखती है और भुवन पर आसक्त होती है तब भुवन की स्थिति डाँवा-डौल हो जाती है। वह मानसिक उलझन तथा द्वंद्व में फँस जाता है। उसकी विवशता बढ़ती ही जाती है। आखीर वह दोनों से दूर रहने की कोशिश करता है। भुवन में कर्तव्यों के प्रति सजगता भी दिखायी देती है। रेखा के बच्चे को वह अपना नाम देने के लिए तैयार होता है। इस प्रकार भुवन शिक्षित, कर्तव्यों के प्रति सजग, मानसिक उलझन में उलझा हुआ पात्र है।

चंद्रमाधव `नदी के द्वीप` का खल पात्र है। वह मानसिक दृष्टि से कुंठित पात्र है। रेखा और गौरा को पाने के लिए अपना हर मायावी जाल फेंकता है लेकिन हर बार असफल ही रहता है। रेखा और गौरा को अपनी संपूर्ण कथा बताता है। उनसे सहानुभूति पाने की कोशिश करता है। रेखा और गौरा के अच्छे रिश्ते के बीच वह दरार निर्माण करने की कोशिश करता है। रेखा और गौरा दोनों भुवन पर आसक्त देखकर वह मन ही मन भुवन पर जलता है। इस प्रकार चंद्रभुवन एक मनोवैज्ञानिक खल पात्र है।

इस प्रकार सभी पुरूष पात्र शिक्षित होकर भी मनोवैज्ञानिक दिखायी देते हैं।

पंचम अध्याय में प्रमुख स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया है। तीनों उपन्यासों में मिलकर पाँच प्रमुख स्त्री पात्र हैं - शशि, रेखा, गौरा , योके और सेल्मा। शशि `शेखर : एक जीवनी` का प्रमुख स्त्री पात्र है। वह कुंठित, भटके हुए शेखर की प्रेरणा के रूप में उभर आती है। शेखर को बनाने के लिए वह खुद का आत्मोत्सर्ग तक कर देती है। शशि से शेखर की बहन होकर भी कई बार शेखर की प्रेमिका बनकर सामने आती है। इसी कारण उसे अनेक शारीरिक और मानसिक यातनाओं का शिकार

होना पड़ता है। शशि में शेखर के प्रति अनुराग भी है और विवेक भी है। इसी कारण वह द्वंवद्व में उलझ जाती है। इस प्रकार शशि त्याग की प्रतिमुर्ती, द्वंवद्व में उलझी हुई तथा विवेकी नारी है।

रेखा `नदी के द् वीप` की नायिका तथा भुवन की प्रेमिका है। वह एक स्वाभिमानी स्त्री है। वह बंधनहीन जीवन जीति है। भुवन के प्रति वह पूर्ण रूप से समर्पित होती है। भुवन के लिए वह खुद का आत्मोत्सर्ग कर देती है। गौरा का भुवन के प्रति लगाव देखकर उन दोनों के बीच से वह दूर हटना चाहती है। इस प्रकार रेखा शिक्षित, समर्पणशील नायिका है।

रेखा के साथ-साथ उतनी ही अहम भूमिका निभाने का काम गौरा ने किया है। सही अर्थों में देखा जाय तो रेखा से भी अधिक सफलता अज्ञेय जी को गौरा के चरित्र में मिली है। गौरा स्वयं को दु:खों के चरित्र में मिली है। गौरा स्वयं को दु:खों में डुबोकर दूसरों को हँसते हुए देखने में ही ज्यादह खुशी मानती है। अपने गुरू भुवन के प्रति आसक्त होकर भी वह अपनी भावना कभी भी व्यक्त नहीं करती। मीरा जैसी तन्मयता उसकी प्रेम और भक्ति में दिखायी देती है। इसी कारण हर पाठक की सहानुभूति गौरा के प्रति परिलक्षित होती है। इसप्रकार गौरा सुसंस्कृत, विनयशील, विचारशील, प्रतिभासंपन्न और अपनी मन की इच्छा को मन में दबानेवाला पात्र है।अत: स्पष्ट है कि अज्ञेय जी को गौरा के विश्लेषण में काफी सफलता मिली है।

`अपने-अपने अजनबी` यह अज्ञेय जी का नारी-प्रधान लघु-उपन्यास है। उसमें योके प्रस्तुत उपन्यास की नायिका सिद्ध है। योके के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के बाद यह स्पष्ट है कि वह पश्चिमी संस्कृति का प्रतीक पात्र है। योके मूलत: अनास्थावादी, क्षणवादी तथा कुंठित पात्र है। लेकिन आस्थावादी सेल्मा के साथ रहकर धीरे-धीरे उसे आस्थावाद में विश्वास होने लगता है। यही कारण है कि जर्मन सैनिकों द्वारा बलात्कारित योके आखिर आस्थावादी जगन्नाथ की बाहों में दम तोड़ देती है। सेल्मा मृत्यु की दहलिज पर खडी, जीवन की अंतिम साँसे गिनती हुयी दिखायी देती है। फिर भी वह आस्था से जीवन बिताती है। सेल्मा भारतीय संस्कृति का प्रतीक पात्र है। सेल्मा एक कुंठित पात्र है।

अंत में हम कह सकते हैं कि अज्ञेय जी ने अलग-अलग किस्म के तीन उपन्यास लिखे हैं। लेकिन तीनों का प्राणतत्त्व रहा है मनोविज्ञान। अपने हर पात्र को बखूबी ढंग से पाठकों के सामने

प्रस्तुत करने में अज्ञेय जी को अपेक्षित सफलता अवश्य मिली हैं। यहाँ तक कि आगे आनेवाले मनोवैज्ञनिक रचनाकारों के लिए अज्ञेय जी का `शेखर` एक दिपस्तंभ बन जाएगा।

उपलब्धियाँ :-

उपर्युक्त विवेचन- विश्लेषण के बाद मेरे मन में उठे प्रश्नों के जवाब मुझे इसप्रकार मिलें -

1. हर रचनाकार के व्यक्तित्त्व का तथा परिवेश का परिणाम उसकी रचनाओं पर अवश्य होता है। अज्ञेय के भी व्यक्तित्त्व का प्रभाव उनकी रचनाओं पर स्पष्ट रूप से दिखायी देता हैं। अज्ञेय का `शेखर` पढ़ते समय यह भ्रम होता है कि यह शेखर है या स्वयं अज्ञेय ही है।

2. मनोविज्ञान के विवेचन- विश्लेषण के बाद तथा विभिन्न विद्वानों परिभाषाओं को देखने के बाद मैंने अपनी दृष्टि से मनोविज्ञान निम्नप्रकार से जाना -``मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें मानवमन तथा उसके कार्यों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से सर्वांगीन व्याख्या की जाती है।``

3. प्रत्येक रचनाकार की रचना तत्त्वों के आधारपर ही देखी जाती है। अज्ञेय के तीनों उपन्यास तत्त्वों की दृष्टि से बेहद सफल रहे हैं। लेकिन `नदी के द्वीप` और `अपने-अपने अजनबी` में देश काल वातावरण में वे बहुत कुछ असफल रहे हैं।

4. शेखर बचपन से ही एक जिज्ञासू बालक है। वह जो भी दृष्य या घटनाएँ देखता है उसका गहरा असर उसके मस्तिष्क पर पड़ता है। वह देखे हुए दृश्य या घटना का विवरण या कारण हर एक को पुछता है, लेकिन उसका कोई भी जवाब नहीं देता इसी कारण वह मन में उठे प्रश्नों के उत्तर न मिलने के कारण कुंठित बनता है।

5. अज्ञेय जी के सभी नारी पात्र शिक्षित हैं। तथा समर्पणशील है। मनोविज्ञान उनका प्राणतत्व है।

****